सीमा व्यास

आवश्यकता

ई-मेल:seemasrc@gmail.com

"सेठजी, इस माह पगार में से कटौती न करिए। खर्चे के अलावा मुझे चश्मा भी बनवाना है। बस, इसी माह छोड़ दीजिए।"

"अबे, तू क्या करेगा चश्मे का? तेरे लिए तो काला अक्षर भैंस बराबर। लिखने-पढ़ने से तो रहा। और तू लुगाई जात भी नहीं, जो बीनना-चुनना करे। आखिर चश्मे का तू करेगा क्या?"

"सेठ जी, मेरे जाते ही पोता हुलसकर कापी लेकर आ जाता है। बहुत अच्छा लिखने पर उसकी मेडम लाल पेन से कुछ लिखती है। पोते ने बता दिया है कि मेडम के लिखे में बीच में दो लड्डू दिखे तो समझ लेना कि मैंने बहुत अच्छा लिखा है। बस, वो दो लड्डू देखने की खातिर चश्मा..."

चुभन

भर बारिश में भी मैंने अपनी जिद् के चलते रद्दी वाले को बुला ही लिया। सुबह से रद्दी,कबाड़ वाले की पुकार की राह देख रहा था। ऊपर गैलरी से जो दिखा, उसे ही आवाज़ दे दी। घर में कोई न हो तो मैं रद्दी, प्लास्टिक, अटाला आराम से निकाल और बेच देता हूँ। कोई चिक- चिक नहीं।

उस जवान लड़के ने आते ही चारों ओर गर्दन घुमाकर घर का मुआयना किया। मैंने थोड़ा कड़क बनते हुए कहा, "तुम यहीं खड़े रहना, मैं रद्दी लेकर आता हूँ।"

वह बेपरवाह-सा पलटकर नीचे बैठने लगा तो मैंने देखा, उसकी जींस की पीछे वाली जेब बहुत उठी हुई है। मैं सहम गया। हो न हो जेब में चाकू या बंदूक-जैसी कोई चीज है। मौका देखते ही यह मेरा काम तमाम कर सकता है। मैं उससे डरे बिना भीतर जाने को हुआ। मैंने स्टोर में रखे रद्दी के बंडल को उठाने के पहले रसोई में से छोटा फोल्डिंग चाकू उठाकर जेब में रख लिया। जेब पर हाथ फेरकर सुनिश्चित किया कि जेब उठी हुई तो नहीं दिख रही है। फिर रद्दी तुलवाने लगा। रद्दी तौलकर वह तौल बताता जा रहा था। करीब इक्कीस किलो रद्दी तुलवाने के बाद मैंने पूछा, "प्लास्टिक भी लोगे ?"

उसने गर्दन हिलाकर 'हाँ' भरी तो मैंने कोने में गमले के पास टूटी बाल्टी में रखा सामान दिखा दिया। उसने सामान देखा-परखा। बाल्टी पर लगा कीचड़ साफ किया और बोला, "भंगार है सब। फिर भी पचास रूपए दे दूँगा।"

मेरे मन की शंका मजबूती से जस की तस बैठी थी। मैंने तुरंत 'हाँ' कहकर उसे हिसाब करने के लिए कहा। जोड़ तो उसने मौखिक लगा लिया, पर जेब में हाथ डालने से पहले पूछा, "कहीं नल है साब ? कीचड़ लगा है हाथ में।"

मैं चौकन्ना था। भीतर जाकर पानी लाने के बहाने... शंका उचककर आई। मैंने कोने के गमले के पीछे आँगन के नल की ओर इशारा किया, "वहाँ धो लो।"

एक मिनट बाद वह आया और बोला, "ये लीजिए आपके तीन सौ बीस रुपए। और साब, आपका नल टपक रहा है। बारिश भले ही हो रही है पर बूँद-बूँद पानी सँभालना बहुत जरूरी है। वरना हमारे बच्चे पानी के लिए लड़ेंगे। आप कहें तो उसे टाइट कर दूँ ?"

" अं...हाँ..." मैं कुछ कह नहीं पाया। उसने फुर्ती से जींस की पिछली जेब से पिंचिस निकाला और नल कसने लगा। मैं हाथ के नोट जेब में डालने लगा तो जेब में रखा छोटा चाकू एकदम से चुभा। बहुत जोर से।